ISSN No. 2583-3316

हमारे जीवन पर प्लास्टिक का कहर

[1]ओपेन्द्र कुमार सिंह*, आशुतोष मिश्र[2], उमाशंकर मिश्र[3] एवं पावन सिरोठिया[4]

प्राकृतिक संसाधन विभाग

[1,2,3 & 4]कृषि संकाय महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट

पत्राचारकर्ता : singhopendra8@gmail.com

परिचय

आजकल हमारे चारों तरफ सुबह से लेकर शाम तक प्लास्टिक का बहुत अधिक प्रयोग हो रहा है। इसलिए जो हमारे वातावरण में जहर फैलाने का काम करती है और यह आसानी से सड़ती और गलती नही है। आज के दिन लोंगों को प्लास्टिक के गिलासों में गर्म चाय पीने के लिए दिया जा रहा है, जिससे यह जीवन में अधिक जहर घोलने का काम कर रहा है। जबकि यह सभी को मालूम है कि प्लास्टिक की चीजों को खाने-पीने की चीजों से दूर रखा जाना चाहिए। डॉक्टरों के अलावा वैज्ञानिकों का भी यह मानना है कि प्लास्टिक के टिफिन में रखा हुआ खाना शरीर के लिए बहुत ही हानिकारक होता है। आजकल हर घर में लोग बर्तनों से लेकर पैकिंग के सामान के रूप में प्लास्टिक का व्यापक इस्तेमाल कर रही है। भले ही खाना पकाने के लिए इसका इस्तेमाल न हो रहा हों लेकिन सरकार द्वारा प्लास्टिक को प्रतिबंधित करने के बाद भी खाने-पीने के सामान को रखने के लिए इसका इस्तेमाल अधिक हो रहा है। आज के दिन घर-घर में चावल, दाल, चीनी, चायपत्ती एवं आटा आदि प्लास्टिक के बर्तनों में ही रखा जाता है। साथ ही साथ बच्चों को प्लास्टिक की टिफिन में लंच पैक करके दिया जाता है। पानी की बोतल भी इसी की होती है। वर्तमान समय में हर हाँथ में झोले की जगह हर हॉथ में प्लास्टिक की थैलियाँ होती है। आज कल बच्चों के खिलौना भी प्लास्टिक के बने होते हैं। एक तरह से देखिए तो आपके चारों ओर प्लास्टिक ही प्लास्टिक नजर आयेगा। अब तो घर भी प्लास्टिक के बन रहे है। अफ्रीका में ऐसे घर बनाये जा रहे है, जो प्लास्टिक के बोतलों से बन रहे है। पूरे संसार का 80-85 प्रतिशत प्लास्टिक बहकर समुद्र में जा रहा है। आज यह दुनिया का सबसे बड़ा कूड़ा-भण्डार बन गया है, जो शहर समुद्र के किनारे बसते है। उनके लिए यह एक खतरे की घंटी बन गयी है। अमेरिका के वैज्ञानिक ने एक ऐसा प्लास्टिक खोज निकाला है, जो सूरज की रोशनी से खुद की अपनी मरम्मत कर सकता है। इससे प्लास्टिक समानों का जीवन बढ़ जायेगा। और लम्बे समय तक चल सकेगें मगर इससे होगा क्या ? घरेलू प्रयोगों में आने वाली थैलियों और टायर टयूब से लेकर महँगे चिकित्सीय उपकरणों में इस जादुई पदार्थ का प्रयोग किया जाएगा। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने अपने आप ठीक हो जाने वाला रबर जैसा प्लास्टिक खोज निकाला है। इसमें एक धातु होती है, जो पराबैगनी किरणों को सोखती है। इससे वह गरम हो जाती है। जब यह सूरज की रोशनी में आते है तो अलग हो जाती है। अलग होकर इसके दो अणु दरारों या छेंद में चले जाते है, जिससे प्लास्टिक अपने आप ठीक हो जाते है। उसकी दरारें भर जाती है और जीवनकाल भी बढ़ जाता है।

प्लास्टिक क्यों है हानिकारक

विभिन्न शोधों से पता चला है कि जब गर्म खाद्य पदार्थो को प्लास्टिक के बर्तनों में रखा जाता है तो प्लास्टिक में से बीपीए नामक एक हानिकारक रसायन निकलता है। यह खाद्य पदार्थो में मिल जाता है। इससे बच्चों के शारीरिक और बौद्धिक विकास पर प्रभाव पड़ता है।

प्लास्टिक से एलर्जी भी होने का खतरा रहता है। यह ऐथिलिन रसायन से मिलकर बना होता है। इसका प्रभाव सीधे तौर पर हमारे शरीर व मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता है। खासतौर पर बच्चों पर तो और भी। कुछ प्लास्टिक तो रंग भी छोड़ते है। इससे आप को स्किन एलर्जी हो सकती है।

प्लास्टिक में मौजूद रसायन कैंसर भी फैलाते है। प्लास्टिक के गिलास में चाय पीने से कैंसर हो सकता है। इसकी सबसे बड़ी वजह खराब प्लास्टिक का इस्तेमाल होना है। इस गिलास में चाय या काफी डालने से उसमें से गैस निकलती है जो हमारे स्वस्थ्य पर बुरा असर डालती है। कई बार तो गर्म चाय डालते ही प्लास्टिक पिघलने लगती है। इसकी वजह खराब प्लास्टिक ही है। रिसाइकिल्ड प्लास्टिक हमारे और बच्चों की सेहत के लिए हानिकारक है। इससे कैंसर के अलावा अन्य कई बीमारियाँ हो सकती है। इसका जहर हमारे पेट में हमेशा जाता रहता है, जिसका पता भी हमें नही चलता है।

बच्चों के माता-पिता अक्सर सस्ते प्लास्टिक खिलौने खेलने के लिए दे देती है। ये बच्चे उसे मुँह में डालकर हमेशा खेलते रहते है। इससे आगे चलकर सेहत के ऊपर बुरा असर पड़ता है।

ISSN No. 2583-3316

अक्सर लोग प्लास्टिक थैलियों में बची हुई खाद्य सामाग्री फेंक देते हैं जिसे पशु पक्षी और गाय भैंस खा लेते हैं, जो उनकी मृत्यु का एक कारण बन जाता है। यह एक ऐसा मीठा जहर है, जिसे हम दिन प्रतिदिन पीते जा रहे है और पता भी नही चल रहा है। वैज्ञानिकों का मानना है कि प्लास्टिक उत्पादों में विनाइल क्लोराइड, एस्टर्स,बेरियम, एक्रिलामाइड, एस्टीन, एक्रिनाइट्राइल आदि विषैले तत्व पाये जाते है। अगर ये पदार्थ शरीर में पहुँच जाये तो मानव स्वस्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक हो सकते है। प्लास्टिक इन्सान क्या जीव-जन्तुओं के लिए भी हानिकारक है।

मानव भोजन में घुला हुआ प्लास्टिक नग्न आँखों से देखने से दिखाई नही पड़ता। इसलिए हम लोग ज्यादा उस पर ध्यान नही दे पाते है। प्लास्टिक का कचरा पानी में बहुत दिनों तक जीवित रहता है। खासतौर पर से समुद्र के पास के शहरों में यह कचरा पानी को प्रदूषित कर रहा है।

इसलिए हमें चाहिए कि प्लाटिक के बर्तनों का इस्तेमाल करना बन्द करें और इसे लापरवाही से इधर-उधर न फेकें। बच्चों को इससे दूर रखे तो ज्यादा अच्छा होगा। खूब सूरत दिखने वाले प्लास्टिक के खिलौने बच्चों को आजीवन अपंग बना सकते है। प्लास्टिक हमारे वातावरण के लिए बहुत खतरनाक है। इसमें कोई दो राय नही लेकिन कुछ समुद्रीय जीव ऐसे भी है। जिनके लिए प्लास्टिक बहुत ही लाभदायक है। समुद्री जीव होलोबाटेस सीरीसियस नामक पानी की सतह पर आगे पीछे तैरता रहता है। यह अण्डे देने के लिए सतह के नीचे जाता है लेकिन समुद्र में फैले प्लास्टिक की वजह से इसे आबादी बढ़ाने में काफी आसानी हो रही है।

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम

केन्द्र सरकार ने पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 में लागू किया था। इसमें 2003 में संसोधन किया गया। इसके अनुसार नवीन या पुनचक्रित प्लास्टिक से बने ऐसे थैलों का निर्माण,भण्डारण,वितरण या बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। यह अधिनियम प्लास्टिक की थैलियों और खाने की चीजों के भण्डारण लाने ले जाने या पैकिंग के लिए प्रयोग पर भी पाबंदी लगाता है। कुछ राज्य सरकारें भी प्लास्टिक प्रदूषण के प्रति बहुत चितिंत है और धार्मिक स्थानों पर भी प्लास्टिक का पूर्णतः प्रतिबंध लगा चुकी है। मध्य प्रदेश एवं अन्य प्रदेशों द्वारा अन्य प्रदेश 70 माइक्रोन से कम मोटाई की गैर जैविक सामाग्री और 18 x 12 इंच से कम आकार की प्लास्टिक की थैलियों के निर्माण, प्रयोग, भण्डारण और बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। मध्य प्रदेश में चित्रकूट एक धार्मिक स्थल है, जहाँ पर प्लास्टिक की थैलियों के प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है। अगर रोक लगाने के बावजूद कोई भी प्लास्टिक का उपयोग करते पाया जाता है तो मध्यप्रदेश सरकार के द्वारा 1000 रू. का जुर्माना लगाया जाता है। अगर फिर भी कोई नही मानता है तो उसके ऊपर सरकार द्वारा पर्यावरण अधिनियम संरक्षण के अर्न्तगत 2-3 वर्ष की कारागार की सजा सुनाई जा सकती है।

प्लास्टिक पर नयी खोज

इटली की एक कम्पनी ऐसी प्लास्टिक बना रही है। जो पानी में घुल सकती है। अब तो चुकन्दर से निकलने वाले कचरें से प्लास्टिक का निर्माण हो रहा है। चुकन्दर के उत्पादन से निकलने वाले बायो प्रोडक्ट वातावरण के लिए वरदान साबित हो सकते है। अब वह दिन दूर नही जब आपके दफ्तर के 70-80 प्रतिशत सामान प्लास्टिक के होगें। दूसरी तरफ भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में वैज्ञानिकों की एक टीम ने पर्यावरण के लिए खतरनाक माने जाने वाले प्लास्टिक से पेट्रोलियम बनने की एक नई तकनीक विकसित की है। इसमें उत्प्ररकों का एक संयोजन विकसित किया गया है। जो प्लास्टिक गैसोलीन या डीजल या एरोमेटिक के साथ-साथ एलपीजी के रूप में एक गौण (प्राथमिक) उत्पाद में तब्दील कर सकता है। इस तकनीक की खास विशेषता यह है कि तरल ईधन यूरो-3 मानकों को पूरा करता है और उत्प्रेरकों एवं संचालन मापदण्ड में बदलाव के जरिये इसी कच्चे पदार्थ से विभिन्न उत्पाद प्राप्त किये जा सकते है। प्रदूषण को रोकने के लिए प्लास्टिक के घर बनाये जा रहे है। आज का समुद्र जो दुनिया का सबसे बड़ा कूड़ादान हो गया है। इसमें सारे विश्व के प्लास्टिक का कचरा जा रहा है। इसके लिए एक प्रभावी और सस्ता रास्ता निकाल लिया गया है और रास्ता एकदम आसान है। प्लास्टिक की खाली बोतलों को बालू, राख या मिटट्ी से भरकर एक दूसरे के ऊपर जमा कर दिया जाता है और फिर गारे से चुन दिया जाता है। इस ढाँचे को नाइलोन की रस्सी से पक्का कर दिया जाता है ताकि वह गिरे नहीं। इस तरह कि घरों का निर्माण ज्यादातर अफ्रीका जैसे देश में अधिक पैमाने पर किया जा रहा है। इससे पर्यावरण एवं हमारी जीवन दोनों की सुरक्षा होती है और गरीबों को सस्ते में घर भी मिल रहा है।

निष्कर्ष

प्लास्टिक एक ऐसा पदार्थ है, जो कि कुछ रसायन से बना होता है। इसलिये इसका प्रयोग करना मतलब प्रकृति को नुकसान पहुँचाना है। पिछले कुछ दशकों में प्लास्टिक का प्रयोग काफी तेजी से बढ़ा है, जो कि एक गंभीर चिंता का विषय है। हमारे द्वारा प्लास्टिक के बढ़ते उपयोग को रोककर ही इस भयावह समस्या पर काबू पाया जा सकता है।

❖❖